सद्गुरु तत्व बोध
SADGURU TATV BODH

नई दिल्ली
अंक – 159

www.saikalpadhyatmsanstha.com

श्री साई शक : 36
अक्टूबर–नवम्बर–2017

॥ ॐ श्री साईनाथाय नमः॥
॥ ॐ श्री सदगुरूनाथ दादाय नमः॥

नित्य साधना से विकारों पर विजय

20.09.1961

गुरूबंधुभगिनियों से

मानव प्राप्त जन्म में सुख, समाधान, शांति प्राप्त करने की अपेक्षा करता है। यह अपेक्षा है और संकल्प भी है। यह अपेक्षा पूरी करने के लिए मानव ने एक साधन निर्माण किया। वह साधन मतलब आपका शिक्षण जिससे आपको 200रु. वेतन की नौकरी मिली। यह 200रु. आपको जन्मऋणानुबंध के अनुसार मिलते है और उसी में इतरेजन व देवादिक इनका ऋणानुबंध होता है। परन्तु देवादिकों के ऋणानुबंधन की प्रचीती आने के लिए जो सत्प्रवृत्ति आवश्यक होती है वह ना होने से दुःख निर्माण हुआ और दुःख दूर करने के लिए ईश्वर की पूजा पाठ करने लगे। परन्तु देव, इस शब्द का अर्थ क्या है?हमारे पास क्या हैं और ईश्वर के पास क्या नहीं है? मान लीजिए कि अगर दुनिया के सब लोगों की बैठक (मीटिंग) हुई तो उस बैठक में जिस भावना से आप अपने देवघर में बालकृष्ण की मूर्ति की तरफ देखते हो, उस भावना से बाकी लोग नहीं देखेंगे। कोई उसका पेपर वेट जैसे भी इस्तेमाल करेगा। इससे एक बात स्पष्ट होती है कि ईश्वर के प्रति भावना सर्वप्रथम निर्माण हुई। परन्तु वह भावना निरंतर रखने की कोशिश नहीं की। उस भावना का एक प्रतीक बनाकर आप मुक्त हो गए। अब एक बार उस प्रतीक के प्रति आपकी भावना जुड़ गई तो भी उसमें फर्क कैसे पड़ता है यदि भावना जतन नहीं हुई केवल प्रतीक जतन किया गया तो भावना की सात्विक प्रवृत्ति लुप्त हो गई और परिणामतः 12 साल में आपका मंदिर अनेक देवताओं के

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
dadab6@gmail.com

Patron
Anand Bapshet

Editorial
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

Subscription
Inland
Yearly : Rs.250.00
Life time : Rs.1000.00

Overseas
Yearly : US$ 250.00
Life time : US$ 500.00

Printed By
Soni Printers
Cell : 09718657567

Published Every Month

©All rights reserved with Publisher

प्रतीकों से भर गया जैसे कि केसरी पत्थर मिल गया तो बन गया देव। ''तुम तो इन्सान हो, लेकिन नजर नहीं आता'' इसलिए आपका प्रतीक भी एक पूजा की थाली मे रखा। फलाने फलाने औपचार किए व पूजा हो गई और हमने ईश्वर का बहुत कुछ किया यह आपकी कल्पना है। आप कहते हो कि साढ़ेसात बजे बाबा की आरती करते है, क्या आपको यह शब्द प्रयोग ठीक है?बाबाकी आरती करके आप क्या करोगे?''शक्कर तो मिठी है, उसमें और शक्कर मिलाई तो शक्कर बढ़ेगी, मिठास नही। इसलिए तुम बाबा को नहीं बनाना तुम खुद कुछ बन जाओ''। भावना से आरती करनी है, वह हम कहाँ तक पहुँचे है इसका अभ्यास करने के लिए। भावना से आरती करते हो तो उसका जबाव क्या आपको मिला?मैं अपनी काया लेकर उनकी काया को पूज रहा हूँ, यह बैठना और स्वीकार करना कायिक है। परन्तु उससे क्या उनके वाचा और मन की पहचान हुई? वह जन्मजन्मों तक नहीं होगी। परन्तु कम से कम तुम्हें क्या समझना चाहिए यह जो वे बता रहे है वह भी तुम्हें समझ नहीं आ रहा है।

पंचतत्वों में से एक तत्व–सुख यह ईश्वर के पास है। आपके घर के तीन व्यक्ति नमस्कार करते है, और दो व्यक्ति दूर से ही सिर्फ देखते है, फिर भी ईश्वर सुखी है। वे ऐसा तो नहीं कहते कि मुझे प्रणाम ना करने वाले उन दो लोगों का नाक काटना चाहिए। आपके पास पैसा नहीं था, इसलिए दुःख था, परन्तु पैसा मिलने के बाद भी क्या आप सुखी हो?आप मख्खन मांग रहे हो मगर वह लेने के लिए क्या आपने बर्तन लाया है?आज दुनिया में हर कोई तुम्हें परेशान कर रहा है ऐसी तुम्हारी कल्पना है मगर तुम खुद दुनिया को कितना परेशान करते हो इसका क्या कभी आपने विचार किया है?सूरज आया, उसका प्रकाश आया परन्तु तुम्हारे दिमाग का अंधेरा नहीं गया। गणेशजी को मोदक चाहिए ऐसा वे बताते हैं मगर तुम्हारे दुर्गुण नही चाहिए यह बताना क्या वे भूल गए?तो गणेशजी नहीं भूले, उन्होनें वह बताया, और भक्त ने वह सुना परन्तु उसकी तरफ ध्यान नही दिया। पूजा मे बैठने के बाद बेल का पत्ता टूटकर त्रिदल का व्दिदल हुआ तो आप माली को कोसते हो। गुस्सा होकर चंदन घिसने का पत्थर व चंदन पटकते हो। वास्तव में कितनी कोमलता से पूजा करनी चाहिए। आपकी चप्पल की एक कील निकली तो कब मोची मिलता है, ऐसा आपको होता है। परन्तु जिसने, जो कुछ भी मैं बता रहा हूँ वह दुनिया के हर कोने तक सुनाई दे इसलिए खुद के हाथ पर कील ठोक ली, उस प्रेषित का विचार आपने नहीं किया। एक के बाद एक प्रेषित आए परन्तु मानव ने कहा कि मुझे इनमें कोई ईश्वर नहीं दिखता है। कल प्रत्यक्ष ईश्वर भी सामने आए तो भी मानव यही कहेगा। जब तक ईश्वर मे खुद को देख नही सकते, तब तक ईश्वर दिखाई नहीं देंगे। आखिर ईश्वर ने निर्णय लिया कि मैं मानव को ही ईश्वर बना देता हूँ।

आप ईश्वर के सामने विकारों के साथ बैठते हो, उसे कहते रहते हो कि मुझे इतने पैसे दो तो मैं इस तरह से तुम्हारी पूजा अर्चना करूँगा। परन्तु ईश्वर के पास विचार है, उसे तुम्हारे विकारों की पूरी कल्पना है। परन्तु वह कहता है कि भक्त कैसा भी हो, मुझे उसे सुख समाधान देना चाहिए। हमें अगर पाँच रूपये का नोट चाहिए तो हमारे पास के खुल्ले पैसे देकर हम 5 रू. का नोट ले सकते है, या फिर किसी की जेब काट के भी प्राप्त कर सकते है। मतलब सन्मार्ग से, अपने पास की कोई चीज

देकर 5 रू. का नोट प्राप्त किया जा सकता है तो फिर ईश्वर के सामने बैठकर जब आप सुख समाधान मांगते हो तो फिर उसके बदले में ईश्वर को क्या देते हो?अगर अपने विकार वासनाऐं दोगे तभी आप वास्तव में सुखी होंगे। मगर यह करने के लिए आप तैयार नहीं होते हो।

आपकी नौकरी का मार्ग निश्चित है फिर आपका ईश्वर का मार्ग बार बार क्यूँ बदलता है?काया यह आपका घर, विचार यह नौकरी और इच्छा यह मेरी गाड़ी है, अब कैसे जाना है यह आप निश्चित कीजिए। मुझमें अंशमात्र ईश्वर है, उसको बढ़ाकर उसका अनुभव लेकर, औरों को सुख–समाधान देना यह मार्ग निश्चित कीजिए। पहले दिन बस से नौकरी पर जाते तथा आते समय, सही स्टॉप पर उतरे या नहीं इसकी ओर आप ध्यान देते थे और फिर मार्ग निश्चित होने पर आँख बंद करके एक निश्चित बस मे चढ़ते हो और उतरते हो। ईश्वर के पास जाने का मार्ग भी इतना ही निश्चित होना चाहिए। रेल गाड़ी से सफर करते समय 'पास' नहीं हो तो जुर्माना भरना पड़ता है परन्तु यहाँ पास के बिना ही आते हो मतलब बाबा गुस्सा करेंगे इसलिए जैसी तैसी हाजिरी लगाते हो। उसके लिए क्या कुछ जुर्माना देना पड़ता है?ईश्वर यह साधन नहीं है बल्कि आपके विचार, इच्छा, कार्य यह आपका साधन है। आपको पचास रूपयों की कमी हुई तो संदल के प्रसाद का अनुष्ठान लगाते हो। परन्तु ''हमें सचमुच ही किसी चीज की कमी है तो वह ईश्वर की कृपा की'', इसका एहसास आपको नहीं होता। आप अनुष्ठान एक हफ्ते के लिए लगाते हो परन्तु वह पूरा होने तक ना रूककर तीसरे–चौथे दिन ही किसी के पास पैसे मांगने जाते हो। अर्थात ये इतरेजन से लाए हुए पैसे वापस करने पड़ते है।

आपको जीवन में सुख का लाभ होना चाहिए ऐसी इच्छा होगी तो आपको अपने सुख का एक प्रमाण निश्चित करना चाहिए। बाजार से आलू लाते हो उसकी असली कीमत कब चुकाते हो?चार आना सेर, यह उस पदार्थ की बाजार मे कितनी मांग है इसका निर्देशक है। मगर वह आलू खाने के बाद जो समाधान आपको मिलेगा वह समाधान ही उस आलू की असली कीमत है। खाने में कितना नमक डालने से पदार्थ स्वादिष्ट लगता है और खाने के बाद समाधान मिलता है इसका प्रमाण आपकी समझ में आया है। उस प्रमाण से कम या ज्यादा नमक हो तो समाधान नहीं मिलता। इसी प्रकार हर चीज का एक प्रमाण निश्चित कीजिए, और अगर ऐसा करोगे तो एक समय ऐसा आएगा कि आपको मिलने वाली हर चीज की, पदार्थ की कीमत कितनी अनमोल है, यह आपकी समझ में आ जाएगा।

जीवन यह विकारमय है और वह होगा ही। परन्तु आसक्ती का रूपांतर जब तक निरासक्ति मे नहीं होता तब तक निरंतर सुख नहीं मिलेगा। पहले चार आना सेर मिलने वाला चावल आज सवा रूपया सेर हो गया। चावल वही है, उसकी रूची में भी बदलाव नहीं हुआ फिर खाने वाले की वासना में बदलाव क्यों होता है?हमे कोई पदार्थ कम या ज्यादा मिला इसलिए समाधान नहीं मिलता है बल्कि हमारा प्रमाण निश्चित हो गया इसलिए समाधान मिलता है। यह धर्म वासना के बारे में कब होगा?हम भोजन करते समय चावल के साथ सब्जी कितनी लेनी है, नमक ज्यादा हुआ तो और कितना चावल

लेना है यह प्रमाण आप अच्छी तरह से जानते हो तो फिर मैं अगर किसी को तेज मिर्ची लगता हूँ तो मुझमें कौन सी चीज कम या ज्यादा करनी चाहिए इसका अभ्यास करों। उसे मीठा मत बनाओं बल्कि तुम खुद मीठे बनो।

आपमें और ऑफिस में अंतर कितना है?तो स्टेशन आकर लोकल में चढ़कर ऑफिस पहुचनें मे जितना वक्त लगता है उतना अंतर है। फिर तुममें और हममें कितना अंतर है?यह विचार करो। एक गाड़ी अगर समय पर नहीं निकली, तो उस गाडी के पॅसेंजर लोग बाद में आने वाली गाड़ी में चढ़ते है और उसमें बहुत भीड़ होती है। उसी प्रकार आपकी साधना रूपी गाड़ी समय पर नहीं निकली, लेट हो गई या एकाद दिन आप साधना के लिए उपस्थित नहीं रहे, तो कल आते समय (साधना करते समय) आज के और कल के विकार रूपी पॅसेंजर एक साथ आने से बहुत भीड़ होकर आपको ही तकलीफ होती है। इसलिए हर रोज साधना के लिए उपस्थित रहना चाहिए।

परमार्थ विषयक मार्गदर्शन
प.पू. मो. जिलानी बाबा 17.09.1961

एक महिला भक्त ने बाबा से मिलकर कहा कि उनके पति को साल में एक डेढ़ महीना दासबोध का निरूपण जोर शोर से बताने की इच्छा होती है। उनके द्वारा दासबोध से बताई हुई परमार्थ की चार बातें सुनकर थोड़ा अच्छा लगता है परन्तु घर में अशांतता है व पैसा बिल्कुल भी नहीं रूकता। इस पर बाबा ने कहा कि प्रपंच ठीक किया तो परमार्थ होता ही है, वरना दासबोध पढ़ना और दोपहर मे 12 बजे आए हुए इन्सान को अन्न तो देना नहीं, ऊपर से उल्टा उसको भगाना इससे तो अच्छा है, कि दासबोध ना पढ़ो। इससे तो प्रपंच ठीक करके किसी विद्यार्थी को शिक्षा के लिए सहायता करके चार पैसे देने का मतलब परमार्थ करना ही है। घर में अगर पैसे को पैसा जुड़ा नहीं तो माथे को माथा नहीं लगता और पेट को पेट नहीं लगता। मुझे जो कुछ भी दृष्टि प्राप्त हुई है उससे मुझे आपके कर्मों का दासबोध समझ में आता है परन्तु परमार्थ का दासबोध समझ मे नहीं आता।

एक भक्त ने बाबा से कहा कि आगे का प्रसाद कुछ दिनों बाद लेना चाहता हूँ, थोड़ा विश्राम करने की इच्छा है। इस पर बाबा ने कहा कि यदि आपने प्रसाद लेना रोक दिया तो क्या आपके लिए इस दुनिया में कुछ रूकने वाला है?क्या बारिश, सर्दी कभी रूकने वाली है?वैसे ही क्या आपके कर्मों के लिए विश्राम है?आप हमारे प्रसाद को पाँच हफ्ते विश्राम देना चाहते हो तो फिर क्या आप अपने पेट को कम से कम एक हफ्ता विश्राम देने के लिए तैयार हो?

।। शुभं भवतु।।

एक तुच्छ जन्म जन्म का सेवक,
श्री साईकल्प अध्यात्म संस्था